

हमिलयी याक

भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (Food Safety and Standard Authority of India- FSSAI) ने हमिलयी याक को 'खाद्य पशु' के रूप में मंजूरी दे दी है।

- इस कदम से पारंपरिक दूध और माँस उद्योग का हिससा बनाकर उच्च तुंगता वाले गोजातीय/बोवाइन पशुओं की आबादी में गरिबट को रोकने में मदद मिलने की उम्मीद है।
- खाद्य पशु वे हैं जिनमें मनुष्यों द्वारा पाला जाता है और खाद्य उत्पादन या उपभोग के लिये उपयोग किया जाता है।

हमिलयी याक

■ परिचय:

- याक **बोवाइन (Bovini)** जनजात से संबंधित हैं, जिसमें **बाइसन, भैंस और मवेशी** भी शामिल हैं। यह **-40 डिग्री सेल्सियस** तक के तापमान को सहन कर सकता है।
 - इनके लंबे बाल उच्च उच्च तुंगता वाले क्षेत्रों में रहने हेतु इन्हें अनूकूल बनाते हैं, जो परदे की तरह अपने पक्षों से लटके रहते हैं। इनके बाल इतने लंबे होते हैं कि वे कभी-कभी ज़मीन को छूते हैं।
- हमिलयी लोगों द्वारा याक को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाता है। तबिबती कविदंती के अनुसार, तबिबती **बौद्ध धर्म** के संस्थापक **गुरु रनिपोछे** ने सबसे पहले याक को पालतू बनाया था।
 - भारतीय **हमिलयी क्षेत्र** के उच्च तुंगता वाले स्थानों पर उन्हें खानाबदोशों की जीवन रेखा के रूप में भी जाना जाता है।

■ पर्यावास:

- ये तबिबती पठार और उससे सटे उच्च तुंगता वाले क्षेत्रों के लिये स्थानिक हैं।
 - 14,000 फीट से अधिक ऊँचाई पर याक सबसे अधिक आरामदायक स्थिति में रहते हैं। भोजन की खोज में ये 20,000 फीट की ऊँचाई तक चले जाते हैं और प्रायः 12,000 फीट से नीचे नहीं उतरते हैं।
- याक पालन करने वाले भारतीय राज्यों में **अरुणाचल प्रदेश, सकिमि, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश और जम्मू एवं कश्मीर** शामिल हैं।
 - याक की देशव्यापी जनसंख्या प्रवृत्ति दिशाती है कि इनकी आबादी बहुत तेज़ी से घट रही है। भारत में याक की कुल आबादी लगभग 58,000 है। इसमें वर्ष 2012 में आयोजित पछिली पशुधन गणना से लगभग 25% की गरिबट आई है।
 - इस भारी गरिबट को **बोवडि (मवेशी परिवार का एक सतनपायी)** से होने वाले **कम पारशिरमकि को ज़मिमेदार ठहराया जा सकता है, जो** खानाबदोश प्रकृति वाले याक को पालने एवं उनके रखरखाव एवं हेतु हतोत्साहति करता है।
 - ऐसा मुख्य रूप से इसलिये है क्योंकि याक का दूध और माँस पारंपरिक डेयरी तथा माँस उद्योग का हिससा नहीं है एवं उनकी बकिरी स्थानीय उपभोक्ताओं तक ही सीमित है।

■ महत्त्व:

- याक स्थानिक **खानाबदोशों के लिये एक बहुआयामी सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक भूमिका निभाता है**, जो इन्हें मुख्य रूप से हमिलय क्षेत्र के ऊँचे इलाकों में अन्य कृषिगतविधियों की कमी के कारण अपने पोषण और आजीविका सुरक्षा अर्जति करने में मदद करते हैं।

■ खतरा:

○ जलवायु परिवर्तन:

- वर्ष के गर्म महीनों के दौरान उच्च ऊँचाई पर पर्यावरणीय तापमान में वृद्धिकी प्रवृत्ति के परिणामस्वरूप याक में उष्मागत तनाव (Heat Stress) बढ़ जाता है जो इसकी शारीरिक प्रतिक्रियाओं को प्रभावित कर रहा है।

○ इनब्रीडिंग:

- चूँकि युद्धों और संघर्षों के कारण सीमाएँ बंद हैं इसलिये मूल याक क्षेत्र से नए याक जर्मप्लाज्म (**Germplasm**) की उपलब्धता की कमी के कारण सीमाओं के बाहर पाए जाने वाले याक इनब्रीडिंग से प्रभावित हैं।

■ जंगली याक (**Bos mutus**) की संरक्षण स्थिति:

○ **IUCN रेड लिस्ट:** सुभेदय

- IUCN द्वारा याक की **जंगली प्रजातियों को बोस म्यूटस** जबकि **घरेलू प्रजातियों को बोस गूरुनिंस** के तहत वर्गीकृत करता है।

○ **CITES:** परशिषिट-I

○ **भारतीय वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम 1972:** अनुसूची-I

स्रोत: द हट्टि

PDF Referenece URL: <https://www.drishtias.com/hindi/printpdf/himalayan-yak>

